अध्याय चार

कमलेश्वर के कथा साहित्य में शिल्प पक्ष

कथ्य और रीति में रीति का भी महत्व है। अच्छी से अच्छी वस्तु शिल्प के अभाव में दम तोड़ देती है, उसी प्रकार कई बार सामान्य-सी वस्तु शिल्प क्षमता के बल पर निखर उठती है। माओ-त्से- तुंग का एक कथन यहाँ उल्लेखनीय है। ''कोई भी ह्रसोन्मुखी चीज़ कमजोर शिल्प में आती है तो चिन्ता की बात नहीं है, किन्तु सशक्त शिल्प को लेकर आती है तो उस पर प्रहार करना चाहीए।''[1] माओ का विधान सशक्त शिल्प के प्रभाव को व्यंजित करता है। ''प्रयोग केलिए प्रयोग या नवीनता के व्यामोह में लाया गया शिल्प रचना की प्रभावाभिव्यंजकता को कम कर देता है और साथ ही उसे कृत्रिम भी बना देता है।''[2]

शिल्प विधि से तात्पर्य किसी कृति के निर्माण की उन सारी प्रक्रियाओं तथा रचना पद्धतियों से है जिनके जरिए रचनाकार अपनी अमूर्त जीवनानुभूतियों, मनः प्रभावों तथा विचारों और भावों को मूर्त रूप देकर अत्यन्त संवेद्य एवं सौन्दर्य मूलक बनाता है, शिल्प विधि का शाब्दिक अर्थ है- किसी चीज़ के बनाये या रचने का ढंग अथवा तरीका। अंग्रेज़ी शब्द 'technique' का हिन्दी अनुवाद है 'शिल्प विधि'।

शिल्प विधान रचना के आन्तरिक एवं बाह्य पक्ष से सम्बन्ध रखती है। कमलेश्वर की कहानियो और उपन्यासों के शिल्प सुगठित कलात्मक एवं सफल है।

4.1 कहानी :शिल्प विधान

कमलेश्वर एक पैदाइशी किस्सागो है एक 'सही कलाकार', वे नयी कहानी के एक प्रमुख हस्ताक्षर ही नहीं, आज की कहानी के एक प्रमुख प्रवक्ता तथा शिल्पी भी हैं। वस्तुतः कमलेश्वर के लिए कहानी लिखना, उन्हीं के शब्दों में ''व्यवसाय नहीं विश्वास है... यातना नहीं हैं, यातनापूर्ण हैं वे कारण जो उन्हें (मुझे) कहानी लिखने के लिए मज़बूर करते हैं''[3]

जीवन के प्रति कमलेश्वर का दृष्टिकोण उन्मुक्त एवं स्वतन्त्र रहा है। इसलिए कथा के कथ्य और शिल्प दोनों में जीवन अपने पूरे वैविध्य के साथ उभर आया है।

कमलेश्वर पात्रों का परिचय देने में जल्दबाजी नहीं करते। यह तो उनके कहानी शिल्प की और एक खूबी है। कमलेश्वर की अधिकांश कहानियों का आरम्भ किसी मनः स्थिति, घटना, वातावरण का चित्रण, प्रस्ताव अथवा अन्य ऐसी ही किसी स्थिति से हो जाता है। फिर यह स्थिति विकसित होने लगती है। फिर पाठकों को पात्रों के नाम, उनकी स्थिति अथवा उनके सम्बन्धों का एहसास होता है। आरम्भ में कहीं पर भी पात्रों का उल्लेख नहीं दिया जाता तथा कहानी के सम्बन्ध में कोई संकेत भी नहीं होते। अनुभूति की इस विशिष्ट स्थिति के साथ पाठक एकदम जुड जाता है। पात्रों की

उस विशिष्ट मानसिकता को उसके परिचय के बिना ही वह स्वीकार कर लेता है। बीच में अचानक उन पात्रों के साथ पाठकों का विस्तार के साथ परिचय कराया जाता है, बिना किसी पूर्व परिचय के कारण सम्भव है । यह शिल्पगत विशिष्टता कमलेश्वर की निजी है तथा उनकी अधिकांश कहानियों में प्रकट है।

कमलेश्वर के कथा साहित्य में शिल्पगत विकास की प्रक्रिया भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कथ्य के विकास में वे जिस प्रकार परम्परागत- बोध से मुक्त होकर अपनी नवीनता और मौलिकता को स्थापित करते हैं, उसी प्रकार शैल्पिक दृष्टि से भी परम्परागत शिल्प संयोजना के प्रभाव से मुक्त होने का प्रयास करते हुए, कथ्य के अनुरूप शिल्प खोजते हैं।

4.1.1 देश काल- वातावरण का चित्रण

देश काल वातावरण का चित्रण पुरानी कहानी में भी होता था। किन्तु वहाँ वह के वल स्थिर चित्रण मात्र होकर रह जाता था। कहानी की रचना- प्रक्रिया का अंग बनने के स्थान पर वह कहानी में एक अलग- अलग स्वतन्त्र टुकडे के रूप में दिखायी देता था। इसे अगर कहानी से निकाल भी दिया जाता, तो रचना के मूलभाव में कोई फर्क नहीं पड सकता था। किन्तु 'खोली हुई दिशाएँ' संकलन की कहानियों में परिवेश का प्रस्तुतीकरण रचना- प्रक्रिया का अंग बनकर ही प्रस्तुत हुआ है। कमलेश्वर ने गाँव- कस्बे के परिवेश से जुडी हुई कहानियों में उनके अपने गाँव – कस्बा 'मैनपुरी'

तथा उससे जुडे प्रदेशों का भरपूर वर्णन किया है। उन्होंने कुछ कहानियों में गाँव का नाम 'मैनपुरी' ही दिया है जैसे राजा निरबंसिया, मुर्दों की दुनिया, मानससरोवर के हंस आदि, कमलेश्वर का 'इलाहाबाद' शहर से अटूट सम्बन्ध रहा है। शहरी जिन्दगी ने लोगों को इतना जड़ और यांत्रिक बना दिया है कि वे परस्पर किसी प्रकार की उष्मा का अनुभव नहीं करते 'खोयी हुई दिशाएँ' का चन्दर असीम भीड़ के बीच भी, अपने को बिलकुल अकेला महसूस करता है। परिवेश का यह वर्णन शहर के स्थिर, गतिहीन कार्याकलापों का सूचक है, जहाँ हर कार्य बिना किसी संवेदना के पूर्ण होता है। ''तमाम सड़कें जिन पर वह जा सकता है, लेकिन वे सड़कों कहीं नहीं पहुँचाती। उन सडकें के किनारे घर हैं, बस्तियाँ हैं- पर किसी भी घर में वह नहीं जा सकता। उन घरों के बाहर फाटक हैं, जिन पर कुत्तों से सावधान रहने की चेतावनी है, फूल तोड़ने की मनाही है और घण्टी बजाकर इंतज़ार करने की मज़बूरी है''[4]

'खोई हुई दिशाएँ', का चन्दर 'दिल्ली में एक मौत' का अतुल भवानी, सरदारजी और मिस्टर तथा मिसेज वासवानी एक प्रकार के थे। सब लोग यान्त्रिकता, जड़ता और गतिहीनता के ही अभिन्न अंग है। कहानी के कथ्य- को इसी परिवेश के संदर्भ में समझा जा सकता है। यहाँ परिवेश की अभिव्यक्ति ही कथ्य बन गयी है। कमलेश्वर वे विदेशी पृष्ठभूमि पर भी कहानियाँ लिखी 'आधी दुनिया' में इसका पूरा चित्र देखने को मिलता है।

4.1.2 संवाद

कहानियों में संवाद या कथोपकथन के जरिए कहानी के कथानक एवं पात्रों के चरित्रों का पता चलता है। संवाद को सहज, स्वाभाविक एवं पात्रानुकूल होना चाहिए। कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में अत्यन्त कुशलता के साथ संवादों का नपा- तुला प्रयोग किया है।

'मैं' कहानी का नायक पार्टि में शराब पीकर अपने घर के दरवाजे पर आता है। मैं दरवाजे का ताला जेब से ताली निकालकर खोलना चाहता है। ताला जल्दी खुल नहीं रहा है। सामने पुलिस का आदमी बैठा है। वह सब देखता है। अतः उसे मैं पर शक आता है। इस अवसर पर मैं पुलिस को सबूत देने केलिए कहते है कि ''अच्छा आइए, इससे बडा संबूत मैं नहीं दे सकता कि यह घर मेरा है...।'' मैं बेडरूम का दरवाजा खोलता है और बिस्तर पर सोई पत्नी की ओर इशारा कर के कहता है- ''यह मेरी बीवी है।'' पुलिसवाला कक्षा है- ''हाँ है तो, पर बिस्तर पर यह दूसरा आदमी कौन है।'' मैं कहता है, ''वह मैं हूँ। यकीन कीजिए वह मैं हूँ ।''[5]

'पीपिंग – विलों' कहानी में कमलेश्वर और साउथ आफ्रिका के नैटाल में रहनेवाली एक युवती के वार्तालाप से वर्तमान सामाजिक व्यवस्था पर तीखा व्यंग्य बाण किया है।

"मैं ने पूछा- " "आप हिन्दुस्तानी हैं ?" "नहीं", "वह बोली" - "बहुत बरस पहले मरे ग्रैण्डफादर नैटाल आए थे इंडिया से। वे हिन्दू थे। फिर मेरे पिता ने ईसाई धर्म अपना लिया। मैं ईसाई हूँ। तुमने कभी सोचा है कि धर्म बदलने से आदमी की इच्छाएँ भी बदल जाती हैं ?"मैं क्या जवाब देता ! कुछ समझ में नहीं आया तो यों ही मैं ने कह दिया - "मैं ने अभी तक तो धर्म बदला नहीं है।" "बदलना भी मत।" वह जैसे चीखती हुई बोली- "ईसाई हो तो ईसाई रहना । हिन्दू हो तो हिन्दू रहना। मुस्लिम हो तो मुस्लिम रहना। धर्म बदलने से आदमी को पराई संस्कृति को सहना पडता है, जो हमें अलग - अलग टुकडों में बाँट देती है, फिर हमें चूसती है। और तुम्हें पता है" कहते कहते वह रूकी और उसने अपना सवाल बदल दिया - "तुम्हारा नाम क्या है ?"

"नाम! कमलेश्वर। क्यों ? एकाएक आपको मेरे नाम की ज़रूरत क्यों पड़ गई? " मैं ने पूछा।

"इसलिए कि इस संस्कृति में आदमी अनाम हो गया है। मुझे नाम न मालूम पड़े, तो बहुत खोया- खोया महसूस करती हूँ। तुमने अपना सही नाम बताया है न ? " कहते हुए उसने मुझे सहज विश्वास से देखा।

"हाँ" मैं ने कहा ।

"चलो मान लेते हैं। नहीं तो तुम्हारा पासपोर्ट देखती" चाय का आखिरी घूँट लेकर उसने बात का पिछला सिरा पकड़ा- "संस्कृति एक व्यापार कमलेश्वर .... और आज का आदमी है उस व्यापार की करेन्सी। हम तुम कंरेन्सी हैं।"[6] इस प्रकार संवादों की सफल अभिव्यक्ति कमलेश्वर की कहानियों में देखी जा सकती है।

4.2 शैली

कमलेश्वर ने अपनी बातों को सरलता से एवं सही अर्थ तथा आँकड़ों में अभिव्यक्त करने के लिए अनेक शैलियों का प्रयोग किया है। इसमें प्रमुख है पूर्वदीप्त शैली, फैंटसी शैली, मिश्रित शैली, व्यंग्यात्मक शैली, बिंबों और प्रतीकों का प्रयोग, आदि।

4.2.1 पूर्व दीप्त शैली

पुराने दौर की कहानियों में यथार्थ जीवनक्रम के समानांतर रतनाक्रम चलता था चरित्रों के विगत जीवन की घटनाओं तथा उनके क्रमिक विकास को प्रत्यक्ष घटित होता हुआ चित्रित किया जाता था। इससे रचना अनावश्यक विस्तार की शिकार हो जाती थी। परंतु नयी कहानी में कथा की अपेक्षा जब कथ्य को महत्व प्राप्त हुआ, घटनाओं के अतीत का लेखा – जोखा आवश्यक हो गया। इसी जगह घटनाओं के प्रेरक संदर्भों को ही महत्व मिला। परिणामतः कहानी चुस्त और कथ्योन्मुखी बनी। पूर्वदीप्ति पद्धति के प्रयोग के कारण यह संभव हो सका।

कमलेश्वर ने भी अपनी कहानियों में इस शैली का खूब प्रयोग किया है। उनकी 'खोई हुई दिशाएँ', 'देवा की माँ', 'राजा निरंबसिया ' 'नीली झील आदि बहुत - सी कहानियाँ ' इस शैली में लिखित है।

4.2.2 फैंटसी शैली

फैंटसी नयी कहानी को व्यक्त करने का मुहावरा है। आज व्यक्ति के भीतर जो मानसिक जद्दोजहद, भयाक्रान्त, अनुभूतियाँ और मज़बूरी का कटु अहसास हो रहा है, आन्तरिक स्तर पर व्यक्ति जिस दूसरी जिन्दगी को जी रहा है, उसे प्रचलित भाषा बिंबों, विशेषणों उपमाओं आदि के द्वारा प्रकट कर पाता असम्भव हो गया है एक ओर व्यक्ति की सीमातीत मज़बूरी है, तो दूसरी ओर उस मज़बूरी की पूरी रिद्दत से उसके समूचे अर्थ में अभिव्यक्त कर पाने का कोई शैल्पिक माध्यम नहीं है, ऐसी स्थिति में कलाकार अपनी बात को प्रभाशाली ढंग से, कहने के लिए फैंटसी का सहारा लेता है।

कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में फैंटेसी शैली प्रयोग किया। उनके 'जिन्दा मुर्दे' कथा संकलन में 'अपने देश के लोग' कहानी फैंटसी है। फन्तसी का सफल प्रयोग बयान संकलन की 'बयान', 'जोखिम', 'लड़ाई' आदि कहानियों में हुआ है।

जनतन्त्र में व्यक्ति इतना विवश था कि वह गलत बातों का सक्रिय विरोध तो नहीं कर सकता था, बल्कि शब्दों के द्वारा भी उसे प्रकट नहीं कर सकता था। तब

उसकी भी तपी घुटन बढ़ गयी। एक ओर स्थितियों के गलत होते की असहनीयता और दूसरी कुछ भी न कर पाने की अपनी मज़बूरी का तीव्र अहसास मिलकर व्यक्ति के भीतर जिस जानलेवा मानसिकता का जन्म हुआ उसकी अभिव्यक्ति 'बयान'के फोटोग्राफर की आँख से टपकने वाली खून की बूंदें करती है। आँखों से निकलने वाले आँसू तो किसी अभाव के सूचक होते हैं या दुःख की अनुभूति को प्रकट करते हैं। जबकि 'बयान'के फोटोग्राफर की अनुभूति अभाव और दुःख से अलग अस्तित्व के संकट की अनुभूति है। आँख से खून के कतरों का टपकना उक्त यातना को संप्रेषित करने में सफल हुआ है। 'बयान'की प्रैटसी यहीं चरितार्थ होती है।

'लडाई'में एक ही चेहरे के अनेक लोग शहर में घूमते दिखायी देते हैं। इस स्थिति के द्वारा लेखक हर क्षेत्र के हर व्यक्ति में भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति का संकेत करता है।

4.2.3 मिश्रित शैली

सामाजिक जीवन की वर्तमान जटिलता, उसके अन्तर्विरोध, उसकी नई समस्याओं की अभिव्यक्ति केलिए विभिन्न शैल्पिक पद्धतियाँ उपनाई है। पौराणिक या लोक कथाओं को समकालीन समस्याओं से मिलाकर नई दृष्टि से अर्थान्वित करते युग सत्य को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया गया । कमलेश्वर ने इस दोहरे शिल्प

को अत्यन्त कुशलता के साथ मिश्रित शैली द्वारा अभिव्यक्त किया है। 'राजा निरबंसिया', 'एक थी विमला' आदि इसकेलिए उदाहरण है।

4.2.4 व्यंग्यात्मक शैली

यथार्थ जब अधिक कटु और विकृत हो जाता है तब लेखक को अपनी रचना तीखी और नुकीली बनानी पड़ती है। ऐसी स्थिति में उसे व्यंग्य का सहारा लेना पड़ता है। कमलेश्वर की 'जिन्दा मुर्दे' कथा संकलन की सभी कहानियाँ और 'बयान' कथा संकलन की 'बयान', 'लड़ाई', 'जोखिम' आदि कहानियाँ व्यंग्य प्रधान कहानियाँ हैं।

4.2.5 बिंबों और प्रतीकों का प्रयोग

कहानीकार मनोवैज्ञानिक स्थितियों की अभिव्यक्ति पूर्ण और सार्थक रूप में करने के लिए बिंबों औऱ प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। कमलेश्वर की 'युद्ध', 'तलाश', 'जोखिम'आदि कहानियों में बिम्बों का भरमार द्रष्टव्य है। 'माँस का दरिया', 'पीला गुलाब', 'नीली झील', 'खोई हूई दिशाएँ'आदि बहुत सी कहानियों में प्रतीकों का सुन्दर प्रयोग देख सकते हैं।

4.3 भाषा

कमलेश्वर की भाषा आम जनता की भाषा है। भाषिक स्तर पर कमलेश्वर की शिल्प दृष्टि अपनी प्रारम्भिक कहानियों में स्थूल घटनात्मकता और वर्णनात्मकता में विश्लेषण के स्तर पर उद्‌घाटित हुई। क्रमशः विकसित होती हुई यह दृष्टि अभिधा के स्तर को पार कर संकेत और सूचना के स्तर को प्राप्त करती है। और अन्त में बिम्बात्मकता में संशिलष्ट होती हुई उनकी भाषा समर्थ व परिष्कृत रूप में उद्‌घाटित हुई है।

4.3.1 अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग

'स्टेशन', 'बीयर', 'केयर', 'औफ', 'अण्डर द ब्लू स्काई', 'सिगरेट', 'ब्रिटिश पेट्रोल', 'ट्रे', 'पेट्रोल पम्प', 'बस - स्टॉप', 'लेडी वेटर', 'ट्रेनिंग', 'पोस्ट', 'यूनिवार्सिटी', 'गुड़ - नाइट' आदि असंख्य अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग कमलेश्वर की कहानियों में देखा जा सकता है। अंग्रेज़ी शब्दों के साथ- साथ असंख्य अरबी- फारसी शब्दों का प्रयोग भी किया। 'सिलसिला', 'माथा', 'आसानी', 'हंगामा', 'एकदम', 'मामला', 'चीखना', 'लाश', 'हवा' आदि इसके लिए उदाहरण है।

4.3.2 मुहावरों का प्रयोग

कमलेश्वर की कहानियों में अनेक प्रचलित मुहावरों का प्रयोग हुआ है। जैसे- 'आँखें फटी रह जाना', 'साँप भी मर गया और लाठी भी नहीं टूटी', 'रेगिस्तानी

ऊँट', 'पैरों तले ज़मीन खिसकना' आदि मुहावरे कमलेश्वर की कहानियों को सम्पन्न बनाती है।

4.4 शीर्षक

कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में नामकरण में नूतन प्रयोग किया है। कभी-कभी कहानियों को प्रतीकात्मक और व्यंग्यात्मक नाम दिया। जैसे 'जार्ज पंचम की नाक', 'मानससरोवर में हंस', 'दिल्ली में एक मौत', 'चप्पल', 'कितने पाकिस्तान' आदि। कहीं- कहीं कमलेश्वर नव्यता की प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप बडे विस्मयकारी नाम भी रख गया है जैसे 'हवा है, हवा की आवाज़ नहीं है'.. 'तुम्हारा शरीर मुझे पाप केलिए पुकारता है' 'उस रात वह मुझे ब्रीच कैंडी पर मिली थी' और 'दूसरी सुबह सूरज पश्चिम से निकला था' आदि।

निष्कर्ष

कमलेश्वर की कहानियाँ शिल्प एवं शैली की दृष्टि से अतिनूतन प्रयास ही हैं। ऐसे एक नए शिल्प के प्रयोग में उन्हें सौ प्रतिशत सफलता प्राप्त हुई है। डॉ. धनंजय वर्मा ने अपने एक लेख में कमलेश्वर की कहानी यात्रा के सम्बन्ध में लिखा है कि ''वे पहले परम्परा और परिवेश बोध के प्रति फिर परिवर्तित सामाजिक सन्दर्भ और यथार्थ के प्रति और फिर रूप और शिल्प के प्रति जागरूक रहे हैं।''[7]

4.5 उपन्यासः शिल्प विधान

स्वातंत्र्योत्तर काल के कथाकरों में कमलेश्वर एक प्रमुख नाम है। जीवन की असंगतियों के बीच ताल- मेल बैठाने की जद्दोजहद करनेवाले कमलेश्वर की कथा कृतियों में मध्यवर्ग का यथार्थ स्पष्ट रूप से उभरा है। युग- बोध और युग - सत्य को कमलेश्वर ने सदैव प्राथमिकता दी है। कमलेश्वर सदैव अपने युग की किसी समस्या को सोचते रहते हैं। स्वतंत्रता के बाद की बदली परिस्थितियों एवं बदले जन जीवन को सही मात्रा में प्रस्तुत करने के लिए कमलेश्वर ने कहानियों की तरह उपन्यासों में भी विभिन्न शैलियों या शिल्प विधान का प्रयोग किया।

कमलेश्वर ऐसे रचनाकारों में से हैं जिन्होंने कथा साहित्य को कला के औपचारिक बन्धनों से मुक्त कर दिया। इस कारण से उनकी रचनाएँ पूर्ववर्ती साहित्य से भिन्न एवं दृष्टि से कुछ बदली हुई नज़र आती है। वास्तव में वहाँ शिल्प की नयी अवधारणा जन्म लेती है।

4.5.1 देशकाल वातावरण का चित्रण

देश काल में किसी समाज या राष्ट्र की परिस्थितियाँ, आचार- विचार, रहन-सहन, रीति- रिवाज़ आदि अभिव्यक्त होते हैं। चरित्र चित्रण को पूर्णता एवं स्वाभाविकता प्रदान करने में देश- काल एवं वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है।

कमलेश्वर के उपन्यासों में विभिन्न तरह के देश- काल एवं वातावरण का चित्रण किया गया है।

कमलेश्वर के 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' उपन्यास में उत्तर प्रदेश के मैनपुरी कस्बे की कहानी है। मैनपुरी कस्बे की जिन्दगी को विभिन्न परिप्रेक्ष्य में रखकर प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। 'डाक बंगला' उपन्यास में कमलेश्वर की प्रकृति रमणीयता का वर्णन करने की कला आती है। उपन्यास के प्रारंभ में उन्होंने कश्मीर की प्रकृति रमणीयता का जो वर्णन किया है, वह निस्सन्देह प्रसंसनीय है। ''दूर पर कोलहाई ग्लेशियर गाय की बहुत चौड़ी जीन की तरह ज़मीन पर पसरा हुआ था और जीन से लार की तरह पानी टपक रहा था... नीचे गहरी बरफीली झील दिखाई दे रही थी।''[8]

'काली ऑधी' में जिन घटनाओं का वर्णन किया गया है, वे सब घटनायें खजुराहो नामक प्रदेश में घटित हुई, पहाडी प्रदेश नहीं होने के कारण प्रकृति सुन्दरता का वर्णन इस उपन्यास में नहीं मिलता। दिल्ली और पंचमढी नामक दो जगहों का निर्देश उपन्यास में किया गया है।

'समुद्र में खोया हुआ आदमी' की समस्याओं को दिल्ली की पृष्ठभूमि से उठाया गया है। 'तीसरा आदमी' शहरी परिवेश के घात- प्रतिघात की उपज है, जिसमें दिल्ली महानगर की कथा कही है। 'लौटे हुए मुसाफिर' में सभी घटनाएं उस बस्ती में घडित होती है, जिसमें उट्ठारह सौ सत्तावन में अंग्रेज़ों ने लोहा लिया था। 'आगामी

अतीत' में घटना का केन्द्र दर्जिलिंग से प्रारंभ होकर कलकत्ता महानगर के यात्रिक वातावरण में समाज होता है। 'अनबीत व्यतीत' उपन्यास की कथा सुमेरगढ़ राज्य की सीमा सो सम्बन्धित है। लेखक ने देश और वातावरण का बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है। उपन्यास के आरंभिक पृष्ठ में ही सुमेरगढ़ की भौगोलिक स्थिति स्वतंत्रता के बाद उसके भारत देश में विलीन हो जाने के बाद के परिणामों को दिखाया है।

''दूर- दूर तक फैली अरावली पर्वतमाला की गोद में एक ऊँची समतल- समाट पहाडी पर बने सुमेरगढ़ की दुर्गनुमा कोठी पर रात तेज़ी से उतरती चली आ रही थी। सुमेरगढ़ की इस प्राचीन दुर्गनुमा कोठी में लाल- पत्थरों तथा संगमरमर से बने महलों और विशाल सुने प्रकोष्ठों और गलियारों में अंधेरा भरता जा रहा था।''[9] इस प्रकार कमलेश्वर के उपन्यासों में कथ्य एवं पात्रानुकूल देश काल- वातावरण का सुन्दर प्रयोग हुआ है।

4.5.2 संवाद

उपन्यास मुख्यतः वर्णनात्मक गद्य विधा है। इसमें ज्यादातर वर्णन या चित्रण शैली का प्रयोग होता है। बीच- बीच में आवश्यकतानुसार दो पात्रों के बीच पारस्परिक संवाद भी घटित होते हैं। संवादों के प्रयोग से नाटकीयता का समावेश हो जाता है। कमलेश्वर के अधिकांश उपन्यासों में संवादों का प्रयोग खूब हुए हैं।

संवाद द्वारा ही दो व्यक्तियों की क्रिया 'ातिक्रिया समझने का अवसर मिलता है। 'आगमी अतीत' में संवाद की संक्षिप्तता का उदाहरण निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है, जिन में कम शब्दों में ज्यादा आशय अभिव्यक्त हुआ है । जैसे-

''ज़रा उधर हो जाऊ ?

किधर ?

चंपा के पास।

चंपा को यहीं बुला लो।

नहीं, मैं ही हो आऊँगी ।''[10]

'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास में घटनाओं तथा चरित्रों का विकास अधिकांशतः संभाषण पर निर्भर करता है। पात्रों के संभाषणों से जहां कथानक को गति मिलती है, वहाँ पात्रों के चरित्रों का भी विश्लेषण होता है।

"अस्पताल जा रही हो ?

हूँ । सलमा मुस्कुरा दी थी। क्यों ?

कुछ नहीं। वह और पास आ गया था।

तुमने मुझे बतलाया था ?

नहीं तो

इस तरह मैं नहीं जाऊँगा...।

सलमा चुप रही।

अगर पाकिस्तान बना तो तुम...

जाओगी ?''[11]

कमलेश्वर के निम्न मद्यवर्गीय परिवार की पीड़ाओं, आर्थिक स्थितियों और तनावों को अपने उपन्यास 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' के कथापात्रों की बातचीत से प्रकट किया है। श्यामकाल जैसे पिता की मड़बूरी उनके कथोपकथन में देखी जा सकती है।

''बीरन की माँ.... सब बिखर गया ....

एकाएक घाट पर बैठते हुए श्यामलाल ने कहा।

भगवान की मर्जी है।

हाँ, और क्या.... ठीक है।''[12]

उपयुक्त संवादों से स्पष्ट हो जाता है कि कमलेश्वर के उपन्यासों में संवाद प्रसंगानुकूल एवं सशक्त है।

4.6 शैली

स्वतन्त्रता के बाद की बदली परिस्थितियों एवं बदले जन - जीवन को सही मात्रा में प्रस्तुत करने केलिए साहित्यकारों ने विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। कमलेश्वर ने भी अपने उपन्यासों की सफल अभिव्यक्ति के लिए आत्मकथात्मक शैली, पूर्व दीप्ति शैली, पत्रात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली आदि शैलियों का इस्तेमाल किया।

4.6.1 आत्मकथात्मक शैली

'व्यक्ति' चरित्र की सूक्ष्म "प्रतिक्रियाओं तथा बारीकियों केलिए यह विधि अत्यन्त उपयोगी है''[13] आलोच्य काल में भी कतिपय अच्छे आत्मकथात्मक उपन्यास आये है जिनमें कथा कहनेवाला गौण रूप में रहा है, कमलेश्वर के डाक- बंगला, तीसरा आदमी, काली आँधी आदि उपन्यासों में आत्मकथात्मक शैली बहुत ही सषक्त रूप में उभर कर आई है।

आत्मकथात्मक शैली 'डाक बंगला' नामक उपन्यास को ज्यादा सौन्दर्य प्रदान करती है। तिलक सोचता है, 'कई बार में ने कोशिश की कि इस बात को , जो रह रहकर मेरे दिल में घुमड़ उठती है, कहानी के रूप में लिख डालूं, पर पिछले तीन साल से कोशिश करते रहने के बावजूद मैं लिख नहीं पाया। आज इसे लिखने बैठा हूँ ''तब भी इस बात का यकीन नहीं है कि इसे पूराकर पाऊंगा।''[14]

4.6.2 पूर्वदीजि शैली

आधुनिक उपन्यासों में अधोमुखी कथा प्रभाव की प्रणाली अधिकांशतः उपलब्ध होती है। तदर्थ जिन टेक्निकों को कार्यान्वित किया जाता है उन में पूर्वदीप्ति सर्वाधिक लोकप्रिय है। किसी पात्र विशेष को विशिष्ट घटना- चक्र में उपस्थित कर अतीत की स्मृतियों को ताजा करने केलिए सिनेमा में फ्लेश- बैक की टेक्निक अपनायी जाती है। फ्लेश - बैक की टेक्निक अपनायी जाती है। फ्लेंश- बैक की सिनेमाई सफलता ने

उपन्यासकारों को भी इस दिशा में प्रेरित किया है और आजकल के उपन्यासों में सर्वसाधारणतः इसे प्रयोग में लाया जा रहा है। 'डाक बंगला', 'तीसरा आदमी', 'लौटे हुए मुसाफिर' आदि उपन्यास इस कोटि में आते हैं।

4.6.3 व्यंग्यात्मक शैली

व्यंग्य शब्द की व्युत्पत्ति वि अ अंग से मानी गयी है। व्यक्ति, समाज या वस्तु का कोई भी अंग उपयुक्त स्थान पर नहीं होता तब वह व्यंग्य का वस्तु बन जाता है।

आधुनिक काल की कोई भी औपन्यासिक रचना ऐसा नहीं होगा जिसमें व्यंग्यात्मकता का पुट न हो। अन्य उपन्यासकारों की भाँति कमलेश्वर ने भी समकालीन समस्याओं की सफल अभिव्यक्ति के लिए अपने उपन्यासों में प्रस्तुत शैली का खूब प्रयोग किया है। उनके 'रेगिस्तान', 'आगमी अतीतञ', 'कितने पाकिस्तान', 'सुबह दोपहर शाम' आदि उपन्यास इसके प्रमाण है।

4.6.4 संकेतों का प्रयोग

एक प्रसंग या घटना को विस्तार के साथ न कह कर उसका इंगित या इशारा मात्र कर देना ही संकेत शैली का उपादान है। कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों में संकेतों का खूब प्रयोग किया है। 'डाक बंगला', 'लौटे हुए मुसाफिर' आदि इस तरह के उपन्यास है।

4.6.5 प्रतीकों का प्रयोग

जब सादृश्य के कारण कोई वस्तु किसी अन्य वस्तु का प्रतिपादन करती है, तो उसे प्रतीक कहा जाता है। प्रतीकात्मकता आधुनिक उपन्यासों की एक प्रमुख विशेषण हैं। 'डाक बंगला', 'काली आँधी', 'लौटे हुए मुसाफिर', 'सुबह दोपहर शाम' आदि रतनाएँ प्रतीकात्मकता का एक संपूर्ण नमूना है।

4.7 भाषा

उपन्यास के रचना- संविधान में भाषा का महत्व अक्षुण्ण है। आज हिन्दी के उपन्यास लेखन का क्षेत्र पहले की तुलना में पर्याप्त विस्तृत हो चुका है। हिन्दी भाषी क्षेत्रों में स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा का क्षेत्र प्रचार, अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के लेखकों का हिन्दी लेखन के प्रति आकर्षण तथा अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकारों द्वारा अपनी प्रतिभा और साधना का योगदान इसके लिए बहुत कुछ उत्तरदायी है। कमलेश्वर ने सहज सरल भाषा के साथ ही साथ कहीं, अंग्रेज़ी शब्दों, उर्दू -फारसी शब्दों एवं मुहावरों का भी प्रयोग उपन्यास में किया है।

कमलेश्वर ने भाषा का प्रयोग ज्यादातर भावों के अनुकूल किया है, जहाँ वह प्रकृति के प्रचण्ड और भयानत रूप का चित्रण करता है। वहाँ भाषा में अद्‌भुत ओज दिखाई देता है। जहाँ प्रकृति के सौम्य रूप का चित्रण करता है, वहाँ भाषा के प्रसाद गुण की प्रधानता हो जाती है। जहाँ प्रेम की संवेदना का चित्रण अपेक्षित होता है, वहाँ भाषा

माधुर्य गुण से युक्त होती है। पात्रों की मनः स्थिति के अनुसार भाषा में भी परिवर्तन हो जाता है।

4.7.1 अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग

कमलेश्वर के उपन्यासों में अंग्रेड़ी शब्दों और वाक्यों का प्रयोग हुआ है। 'काली आँधी' उपन्यास में उर्दू - अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग किया गया है।

पंचमढी पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल, जग्गीबाबू और लिली के बीच में जो वार्तालाप होते हैं, वहाँ उन अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग किया गया है। ''प्रिंसिपल ने पूछा था, यस माई चाईल्ड, वाड्स योर नेम!

- लिली! .... लिली ने तुतलाते हुए कहा था।
- वेरी स्वीट नेम! लिली ! सो यू विल लिव विद अस हियर ?
- यस ! लिली बोली थी ।''[15]

4.7.2 मुहावरों का प्रयोग

कमलेश्वर के उपन्यासों में अनेक प्रचलित मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग मिलता है। जैसे- गहरी नज़र डालना, कलई खुल जाना, बात टालना, माथे पर कलंक लगना, आदि।

निष्कर्ष

कमलेश्वर की समस्त औपन्यासिक कृतियों को शिल्प की कसौटी से परखने पर उनमें मन की भावनाओं, विचारों तथा अनुभवों का सामंजस्य दिखाई पड़ता है। उनके उपन्यास भाव- प्रधान चरित्र- प्रधान, समस्या प्रधान कथानक को लेकर निर्मित हुए हैं। चरित्रों का चुनाव भी बहुक्षेत्रीय है। शिक्षित- अशिक्षित, शहरी-ग्रामीण इत्यादि स्त्रोतों से चरित्र लिये गये हैं। यही कारण इसकी संवाद- प्रक्रिया में विविधता पायी जाती है। चरित्रों के संवाद देशकाल तथा परिवेश के अनुकूल हैं। कमलेश्वर ने शिल्पगत तत्वों के संयक निर्वाह के लिए भाषा - शैली का उचित प्रयोग किया है। उपन्यासकार ने अपनी सामाजिक यथार्थता बोध- को सुचारू ढंग से कृतियों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने मूल कथ्य को अत्यन्त सुन्दर ढंग से औपन्यासीक शिल्प में ढालने में सफल हुए हैं।

संदर्भ सूचि

[1] डॉ. शिवकुमार मिश्र, *नदी के द्वीप का रचना संसार नामक व्याख्यान से*

[2] डॉ. पारूकान्त देसाई, *हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास,* पृ.372.

[3] सम्पादक मधुकर सिंह, कमलेश्वर, पृ.140

[4] कमलेश्वर, *खोई हुई दिशाएँ (समग्र) कहनियाँ,* पृ.368.

[5] कमलेश्वर, *समग्र कहनियाँ,* पृ.639

[6] कमलेश्वर, *पीपिंग – विलो (समग्र कहानियां),* पृ.622,623.

[7] संपादक- सुरेन्द्र, *नयी कहानी, दशाः दिशाः संभावना*, पृ.92.

[8] कमलेश्वर, *डाक बंगल,* पृ.80.

[9] कमलेश्वर, *अनबीता व्यतीत,* पृ.7.

[10] कमलेश्वर, *आगमी अतीत,* पृ.94.

[11] कमलेश्वर, *लौट् हुए मुसाफिर,* पृ.35.

[12] कमलेश्वर, *समुद्र में खोया हुआ आदमी,* पृ.65.

[13] डॉ.पारूकान्त देसाई, *हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास,* पृ 373.

[14] कमलेश्वर, *डाक बंगला-1*.

[15] कमलेश्वर, *काली आंधी,* पृ.96.